बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 92/2023) Year: 5th

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 20/10/2023

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ प्रचुर मात्रा में कंपोस्ट प्रयोग करके खेत की तैयारी कर लें, क्यारियां तैयार करके गोभी, बैंगन, टमाटर, शिमला मिर्च आदि की तैयार पौधों की अविलंब रोपाई करें । ➢ मूली, पालक, गाजर, राई साग, फ्रेंचबीन की भी क्यारियों में बुआई करें। ➢ सब्जी मटर की बुआई हेतु खेत की तैयारी कर लें। ➢ टमाटर, बैगन, शिमला मिर्च/मिर्च तथा गोभी में सुखी घास अथवा प्लास्टिक मल्चिंग करके मृदा नमी संरक्षण एवं खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	➢ रबी फसलों की बुवाई समय पर करना सुनिश्चित करें। ➢ खरीफ फसलों की कटाई के उपरान्त खेत अच्छी प्रकार तैयार करें। ➢ उत्तम प्रकार के प्रमाणित बीज का प्रयोग करें। ➢ फसलों की बुवाई उपयुक्त नमी की दशा में कतारों में करना अच्छा रहता है। ➢ खरपतवार की समस्या से बचने हेतु बुवाई के बाद 2–3 दिन के अन्दर फसल के अनुसार खरपतवारनाशी का प्रयोग करें। ➢ कम नमी की दशा में बुवाई पूर्व सिंचाई करना उपयुक्त होगा। बुंदेलखंड की मृदाओं में कार्बनिक कार्बन व फास्फोरस की कमी है तथा इसका उचित प्रबंधन तिलहन व दलहन फसलों के लिए आवश्यकहै. गोबर की खाद का 5 टन/ हेक्टेयर अथवा 2 टन / हेक्टेयर वर्मी कम्पोस्ट का प्रयोग बुआई से 10-20 दिन पहले करें. ➢ **सरसों**: सिंचित दशा में 80:40:40:20 नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश और सल्फर (की.ग्रा./ हे) की दर से करें. असिंचित क्षेत्र में 50:25:25:20 (की .ग्रा./ हे) की दर से नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश व सल्फर का प्रयोग करें. सिंचित क्षेत्रों में फास्फोरस, पोटाश व सल्फर की पूरी मात्रा तथा नत्रजन कीआधी मात्रा बुआई के समय प्रयोग करें तथा नत्रजन की शेष आधी मात्रा प्रथम सिंचाई के समय प्रयोग करें. असिंचित क्षेत्रों में उर्वरकों की पूरी मात्रा बुआई के समय प्रयोग करें. ➢ **दलहन**: चने के बीज को राइज़ोबियम कल्चर से उपचारित करने के पश्चात बुआई करें. 20:60:20 (की.ग्रा./ हे) की दर से नत्रजन फास्फोरस व पोटाश का प्रयोग बुआई के समय करें.

		➢ **गेंहू–**गेंहू की फसलमें 120.–60–40 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से नत्रजन फास्फोरस तथा पोटाश का प्रयोग करना चाहिये।फास्फोरस तथा पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बोवाई के समय प्रयोग करना चाहिये। शेष आधी मात्रा बोवाई के 20–25 दिन बाद क्रन्तिक जड़ निकलने की अवस्था पर करना चाहिये। यदि खेत में जिंक की कमी हो तो जिंक सल्फेट 20–25 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से बोवाई के समय प्रयोग करना लाभदायक होता।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ खुरपका–मुँहपका का टीका अवश्य लगवायें। ➢ बरसीम एवं रिजका के खेत की तैयारी एवं बुआई करें। बरसीम फसल से अधिक उपज व लम्बी अवधि तक (मध्य जून) तक हरा चारा प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्मों की बुआई करें। ➢ बरसीम की बुआई नये खेत में करनी हो तो बीज को राईजोबियम कल्चर से उपचारित करने पर अधिक हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है। ➢ स्वच्छ जल पशुओं को पिलायें तथा दुहान से पूर्व अयन को धोयें। ➢ बैल बनाने के लिए छ: मास की आयु होने पर बछड़े को बधिया करवायें एवं निम्न गुणवत्ता के पशुओं का बाधियाकरण करवायें। ➢ पशु ब्याने के 1 – 2 घन्टे के अन्दर नवजात बछड़ों – बछि्ड़यों को खीस अवश्य पिलायें। नवजात बछड़ों – बछि्ड़यों को 10 – 15 दिन की आयु पर सींग रहित करवायें एवं उत्पन्न संततियों की उचित देखभाल करें।
4–	**कीट-प्रबंधन**	➢ धान में सैनिक कीट के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहना चाहिए। गंधी कीट के प्रकोप की दशा में फेनवेलरेट 0.04 प्रतिशत धूल 20–25 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से खेत में प्रयोग करना चाहिये। ➢ अरहर में चोटी बेधक कीट के नियंत्रण हेतु क्यूनालफॉस 25 प्रतिशत ई0सी0 1.5 लीटर प्रति हे0 800–1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ जो किसान भाई सरसों की बुवाई करना चाहते है वे प्रमाणित बीज का ही प्रयोग करे एवं बुवाई से पूर्व बीज को ताकत (कैप्टान 70% + हेक्साकोनाजोल 5%) अथवा थिरम 2 ग्राम प्रति किलो ग्राम बीज की दर से बीजोंउपचार करके बोयें। ➢ जो किसान भाई रबी मौसम में दलहनी फसलों चना, मटर एवं मंसूर की फसल उगाना चाहते है सन्तुति किस्मों के प्रमाणित बीज, बीज उपचार हेतु कवकनाशी अथवा जैव कवकनाशी व राइजोबियम कल्चर प्रबन्ध करले । बुवाई से पूर्व बीज को वीटावैक्स पावर (थिरम 37.5% + 37.5% कारवाक्सिन) अथवा ताकत (कैप्टान 70% + हेक्साकोनाजोल 5%) 2 ग्राम प्रति किलो ग्राम बीज की दर से बीजोंउपचार करके बोयें अथवा जैविक कवकनाशी ट्राइकोडरमा 5 ग्रा0 प्रति किग्रा0 बीज की दर उपचारित करें । इसके बाद बीज को फसल विशेष राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें। फिर बीज को छाया में सुखा लें।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	➢ फल पौधों का रोपण इस माह के मध्य तक पूरा करें। ➢ वायु–अवरोधक बीजू पौधें इस माह में भी लगा सकते है। ➢ पहले से लगे वायु–अवरोधक वृक्षों की बाग में फैली शाखाओं को काट दें। ➢ मुलवृंत पौधों से फुटान को ध्यानपूर्वक हर 15 दिन बाद हटा दें। ➢ छोटे पौधों को सीधा रखने के लिए बंछटी का सहारा दें।

		➢ फलदार पौधों के निचले हिस्से से निकले अनउत्तपादक सकर्स को हटा दें । कटे हिस्सों पर बोर्डेक्स पेस्ट का लेप करें। ➢ फलदार पौधों के तने के चारो तरफ गहरी खुदाई करें ताकि खरपतवार अच्छी तरह से गहराई से निकल सके, परन्तु जड़ों को तथा तनें को कोई नुकसान न पहुंचें। ➢ किन्नौ पौध प्रर्वधन हेतु जट्टी–खट्टी की पौध तैयार करने के लिये बीज की बुआई की जा सकती है। ➢ चश्मा चढ़ाने के लिये उपयुक्त समय है । इसकी तैयारी पुर्ववतः रखें । चश्मा चढाने से पहले मुलवृंत को एकल तना बना दें तथा आस–पास की सारी टहनियों को काट दें। ➢ अक्टूबर माह के अंत में जिस मुलवृंत में सफेद धारियां नजर आये उसे प्रर्वधन के लिये चुने। ➢ उत्तम किस्म के पौधे की आंख को प्रर्वधन के लिये चयन करें। ➢ मुलवृंत पर 1.5 सेमी. क्षितिज चीरा लगायें तथा एक चीरा 3 सेमी का ऊर्ध्वाधर बनाये इसमें चयन की हुई आंख को लगाकर सुतली या पोलीथीन की पट्टी से बांध दें। याद रखें कलिका बांधते समय न दबे। ➢ नये तथा पांच साल से कम आयु के पौधों में यदि चाहे तो दलहनी फसलों की बुवाई की जा सकती है। दलहनी फसलों के बुवाई करने से भूमि की उर्वरा शक्ति में बढ़ोत्तरी होती है। ➢ अक्टूबर माह में पपीते की रोपाई करें । 90 ग्राम यूरिया, 250 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट एवं 110 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश का मिश्रण मिलाकर पौधे के तने से दूर एक इंच गहरा गोलाकार गड्ढा बनाकर प्रत्येक पौधे को क्यारी में लगााने के बाद 2 महीने के अंतराल पर 6 बार प्रयोग करें। ➢ नींबू में कैंकर ग्रस्त टहनियां काट दें, कैंकर रोग के प्रकोप को रोकने के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लीन १० ग्राम एवं कॉपर ऑक्सी क्लोराइड २०० ग्राम को १०० लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। ➢ नींबू के विकसित बाग (४–५ वर्ष) में १०० किलोग्राम गोबर की खाद , 1.२५ किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट व ०.५० किलोग्राम मूरते ऑफ पोटाश एवं ०.४५ किलोग्राम नत्रजन के साथ –साथ ०.२५ किलोग्राम जिंक सल्फेट का प्रयोग करें । ➢ अमरूद के एक वर्ष के पौधे के लिए प्रति वृक्ष ३० ग्राम नत्रजन जो बढ़कर क्रमशः ६ वर्ष या उससे अधिक उम्र के पौधे के लिए १८० ग्राम नत्रजन होगा, का प्रयोग करें ➢ बेर के वृक्षों में नत्रजन उर्वरक की दूसरी मात्रा दें। यह मात्रा 50 ग्राम नत्रजन से 250 ग्राम नत्रजन प्रति पौधें के हिसाब से प्रथम वर्ष से पांचवें या अधिक वर्ष तक के पौधों में दें। ➢ आम के फलदार पौधों में यदि अब तक गुम्मा रोग ग्रस्त टहनियां न हटा दी हो तो इस माह अवश्य हटा दें। गुम्मा रोग की रोकथाम हेतु नैपथलीन एसिटिक एसिड का २०० पी. पी. एम. अथवा प्लेनोफिक्स ४ मिलीलीटर प्रति ६ लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें तथा इसमें बाविस्टीन 0.1 प्रतिशत भी मिला दें। ➢ आँवला में शूट गाल मेकर से ग्रस्त टहनियों को काटकर जला दें तथा शुष्क विगलन की रोकथाम के लिए ६ ग्राम बोरेक्स प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें । ➢ केले के बाग में प्रति पौधा ५५ ग्राम यूरिया, १५५ ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट एवं २०० ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रयोग कर भूमि में मिला दें ।

7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ खेतों में कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों की उचित देखभाल करते हुए आवश्यकतानुसार निराई गुड़ाई और सिंचाई करें ताकि पेड़ों में अच्छी वृद्धि हो सके। ➢ कृषि वानिकी प्रणाली के अंतर्गत लगाए गए इमारती लकड़ी की प्रजातियों जैसी सगवान, यूकेलिप्टस, अंजन, गम्हार, नीम, मालाबार नीम, कैजुअरिना की निचली शाखाओं को तेज आरी से काटें ताकि गाँठ मुक्त गुणवत्ता वाली लकड़ी प्राप्त हो और कृषि फसल पर छाया का प्रभाव कम किया जा सके। यह पेड़ों को तेज हवा के नुकसान से भी बचाता है। ➢ वानिकी पौधशाला में पर्याप्त धूप बनाए रखने के लिए छायादार पेड़ों की निचली शाखाओं की छंटाई की जा सकती है। ➢ नर्सरी में नियमित सिंचाई करने की सलाह दी जाती है।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	7. डॉ मयंक दुबे
2. डॉ दिनेश साह	8. डॉ अमित मिश्रा
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	9. डॉ दिनेश गुप्ता
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	10. डॉ पंकज कुमार ओझा
5. डॉ राकेश पाण्डेय	11. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
6. डॉ विवेक सिंह	